श्री ए० एम० तारिक़ : म भी कहता हूं लेकिन आपने जिस तरीके से कहा है उससे मालूम होता है कि आपके पास शायद अदादो-शुमार नहीं है कि आसाम में जो फसादात हुये उस में जहां हिन्दुओं की जायदाद लूटी गई वहां मुसलमानों की भी जायदाद लूटी गई ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : बताइये जरा । बिल्कुल नहीं ।

श्री ए० एम० तारिक़ : मुसलमानों के भी मकान जलाये गये । वाइस चेयरमैन साहब, म इस मसले को छेड़ना नहीं चाहता था, मैं और तरीके से अपनी तकरीर करना चाहता था लेकिन मेरे पास यह है :

1. Assam type house (burnt) value Rs. 50,000

SHRI SUNDAR SINGH BHANDARI: Type house run by whom?

SHRI A. M. TARIQ: It was his own house.

SHRI SUNDAR SINGH BHANDARI: Type house run by whom? That is what you do not know.

SHRI A. M. TARIQ: Then, Nazmul Hussain (Assamese) double storeyed Assamese type building, one burnt, value Rs. 70,000. Then, Asfi Khatun (Assamese) widow of Nurul Islam), one Assam type House, burnt, value Rs. 50,000.

मेरे पास 40-50 के करीब नाम हैं । और इस के साथ साथ जहां मुसलिम आबादी ज्यादा थी--मने पिछली दफा भी कहा है -- वहां मुसलमानों ने अपने गैर मुसलिम हमसायों को, अपने दोस्तों को, पनाह दी है, उन की जायदाद बचाई हैं । मेरे पास उन के भी नाम हैं ।

Shri Dayal Sarma of Marwari community, having grocery shop near Gauhati Club is still living with family at Hidayetpur with a Muslim family.

SHRI SUNDAR SINGH BHANDARI: I accept it

श्री ए० एम० तारिक़ : तो म यह कहना चाहता हूं कि इन फसादात में हर एक की जायदाद पर हमला हुआ है लेकिन जिस तरीके से भंडारी साहब ने फर्माया है वह दुरुस्त नहीं । मैं भी जानता हूं, हम में से कौन नहीं जानता है कि पाकिस्तान हिन्दुस्तान की सरहदों के करीब अपनी फौजी ताकत बढ़ा रहा है लेकिन क्या यह हकीकत नहीं है कि हमने बार बार इसके खिलाफ चैलेंज किया है, क्या यह हकीकत नहीं है कि आपके शाना ब शाना हमने पाकिस्तान और चाइना के हमले का मुकाबिला नहीं किया ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : जरूर किया है ।

श्री ए० एम० तारिक़ : जरूर करेंगे, आपको खुश करने के लिये नहीं करेंगे बल्कि इसलिये करेंगे कि यह मेरा वतन है, हमने इस वतन में अपने बाप दादाओं की आखिरी हड्डियां दफनाई हैं, इस वतन में मेरा कल्चर है, यह सिर्फ आपकी मीरास नहीं है ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : आप पाकिस्तान की वकालत कर रहे हैं या अपनी ।

श्री ए० एम० तारिक़ : मैं अपना जिक्र कर रहा हूं ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : अपनी करिये न । मैं आपको समझता हूं ।

श्री ए० एम० तारिक़ : . . . और पाकिस्तान की मुखालिफत कर रहा हूं । मुझे उस दिन का यकीन है जिस दिन कि आप पाकिस्तान के साथी होंगे और हम नहीं होंगे . . .

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : अच्छा ?

श्री ए० एम० तारिक़ : ...क्योंकि दोनों की तहरीक मजहब की बुनियादों पर है, नफरत पर है। जन संघ की बुनियाद भी नफरत पर है और पाकिस्तान की बुनियाद भी नफरत पर है। आप दोनों लोग सेक्युलर ताकतों के खिलाफ एक दिन मिल कर हमला करेंगे लेकिन उस वक्त हम हिन्दुस्तान की सेक्युलरिज्म के साथ होंगे, नाम कुछ भी हो, वह मेहता हो, वह शुक्ला हो, वह आबिद अली हो, हम सब इकट्ठा होंगे और फिरकापरस्ती का मुकाबिला करेंगे। मैं आपको यकीन दिलाना चाहता हूं कि इस तरह की बातें करने से मुल्क की फ़िजा को ख़राब करना, मुल्क के अमन को खतरे में डाल कर अपनी लीडरशिप कायम करना, यह मैं समझता हूं कि मुल्क के साथ दयानतदारी नहीं है।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : इसीलिये तो परिस्थिति बिगड़ती जा रही है।

श्री ए० एम० तारिक़ : बिल्कुल नहीं बिगड़ेगी। बिगड़ती इसलिए है कि आप इस तरह की बातें करें। अगर आप पाकिस्तान के खिलाफ बात करें, हम आपके साथ हैं लेकिन जब आप पाकिस्तान के पर्दे में यहां की सब से बड़ी अक्लियत पर हमला करते हैं, जब आप उन को अपने तीरे सितम का निशाना बनाना चाहते हैं तो मैं आपके खिलाफ आवाज बुलन्द करूंगा। मैं अकेला ही नहीं हूं बल्कि इस मुल्क के करोड़ों हिन्दू आपकी मुखालिफत करेंगे।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : पाकिस्तान के पर्दे में बठना छोड़ दीजिये।

श्री ए० एम० तारिक़ : मैं इस मुल्क में अकेला नहीं हूं, म आपको यकीन दिलाता हूं कि इस मुल्क में करोड़ों मेरे साथी हैं, उन का मजहब कुछ भी हो, हिन्दुस्तान की अक्सरियत सेकुलर है और अगर आपकी छोटी सी अकलियत यह कहती है, छोटी सी अकलियत पर अगर आप यह कहते हैं कि आसाम में पाकिस्तान ने फसादात कराये, चीन ने फसादात कराये, तो मेरठ का कत्लेआम किसने कराया...

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : अगर आपमें अखलाकी जुरात है तो सामने आ कर कहिये कि मेरठ....

श्री ए० एम० तारिक़ : इन दोनों चीजों को अगर आप जोड़ कर लाना चाहते हैं तो उसका भी जवाब मैं देने को तैयार हूं।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : जरूर दीजिए।

श्री ए० एम० तारिक़ : मैं आपकी एक बात का दस जवाब दूंगा, ऐसी बात नहीं है कि आपके चिल्लाने से घबड़ाता हूं, उसकी वजह से अपने जमीर और उसूल को कुर्बान नहीं कर सकता हूं, मैं जान दे दूंगा लेकिन हकीकत के खिलाफ कोई बात...

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : मैं भी उसूल को कुर्बान नहीं करता हूं।

श्री ए० एम० तारिक़ : आप भी दे दीजिए और मैं भी दे दूंगा लेकिन फिर देखिये कि किसका खून कौन सा रंग लेता है, मेरे खून से सेकुलरिज्म के गुलाब निकलेंगे और आपके खून से फिरकापरस्ती की बू आयेगी।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : इन बातों से तो यह मालूम पड़ता है कि....

श्री ए० एम० तारिक़ : बातों की बात नहीं, हम इस मुल्क को एक रखना चाहते हैं और मुझे मालूम है, मैं भंडारी साहब का एहतराम करता हूं, भंडारी साहब ने आज जो तकरीर की है वह उनके दिल की तकरीर नहीं है, वह

[श्री ए०एम० तारिक]

तकरीर महज किसी खास गिरोह के दबाव से की है, वर्ना भंडारी साहब एसी तकरीर करने वाले नहीं हैं, भंडारी साहब मजबूर हो कर किसी जमात के एग्रेसिव ग्रुप के कहने पर, एग्रेसिव ग्रुप की वजह से उनको वह तकरीर करनी पड़ी, वर्ना वह ऐसी तकरीर करने वाले नहीं हैं। आप उनके दिल पर हाथ रखिये तो वहां वही आवाज आयेगी जो कि मैं कह रहा हूं। उनकी हंसी खिसियानी हंसी है, वह इस बात को महसूस कर रहे हैं कि उन्होंने बहुत गलत तकरीर की है।

मिस्टर वाइस चेयरमैन, हमको यह भी देखना है कि कहीं इस मुल्क में सिर्फ चीन और पाकिस्तान का नाम ले कर कोई तीसरी गरमुल्की ताकत तो यहां नहीं ला रहे हैं, क्या आसाम के रहने वाले लोगों ने इस बात का एलान नहीं किया है कि इन फसादात के पीछे सी० आई० ए० का भी हाथ हो सकता है, क्या इस बात से आप बेखबर हैं, हिन्दुस्तान की हुकूमत बेखबर है, क्या इस एवान के लोग बेखबर है कि अमेरिका भी इस किस्म के फसादात चाहता है और खास तौर पर ऐसे इलाकों में जो कि सरहदी इलाके हों। मैं भंडारी साहब से इंतिहाई खलूस, मुहब्बत, रवादारी और बिरादराना-चारे में यह दरख्वास्त करूंगा, यह अपील करूंगा कि वह इस हर चीज को देखें। मुझे फारसी का एक शेर याद आ रहा है जो मैं अपने दोस्त भंडारी साहब की खिदमत में पेश करना चाहता हूं :

बहर रंग कि ख्वाही जामा मभी पोश
मन अंदाज कदतरा मभी शिनासम।

ऐ मेरे महबूब तू चाहे कोई कपड़ा पहन ले तुझको तेरे कद से पहिचानता हूं। आप कैसी बात कीजिये मैं जानता हूं कि आपके पीछे क्या है, आपकी तहरीक क्या है। आइये भंडारी साहब यह भूल कर के कि आप किसी जमात के नुमाइंदा है और मैं भी यह भूल जाऊं कि मैं किसी जमात का नुमाइंदा हूं, हिन्दुस्तानी की हैसियत से, शाने ब शाने चल कर हिन्दुस्तान के फसादात को खत्म करें, इकट्ठे हो कर चलें आप, मैं और राजनारायण और तमाम लोग अपनी जान इसलिये दें कि रंग के नाम पर, मजहब के नाम पर, जबान के नाम पर, जुगराफिया के नाम पर कोई फसादात नहीं होंगे। हम सब एक हैं, खुदा के वास्ते, हिन्दुस्तान के आईन के वास्ते यह कोशिश कीजिए कि मुल्क एक रहे, मुल्क के रहने वाले एक हों और मुल्क में सब को रहने और बसने का आजदाना हक हो। शुक्रिया।]

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, मैं तारिक साहब की तकरीर से वाकई तकलीफ में, बहुत परेशानी में पड़ गया हूं कि वस्तुस्थिति को किस तरह रखूं, मगर एक बात मैं जरूर निवेदन कर दूं कि तारिक साहब से मेरी अर्ज यह है कि वह अपने को मुसलमान का ठेकेदार न समझें और भंडारी साहब से भी यह अर्ज है कि वह अपने को हिन्दू का ठेकेदार न समझें। दोनों से अर्ज है और मैं आज उस हिन्दू और उस मुसलमान दोनों को इस मुल्क के लिए वफादार, सच्चा वफादार मानने के लिये तैयार नहीं हूं जो भारत और पाकिस्तान को पुन: एक करने के मुहब्बत और प्रेम के सीधे रास्ते पर नहीं चल रहा है। इधर उधर छिटपुट कहीं यहां कहीं वहां पकडने से मसला हल नहीं होगा। अगर भंडारी साहब और तारिक साहब दोनों मसले का हल चाहते हैं तो शुरूआत करें कि भारत और पाकिस्तान का एक महा संघ हो जाय। फिर आगे चल कर दोनों का एकीकरण हो क्योंकि यह बंटवारा ही अन्नेचुरल है, अप्राकृतिक है। जब तक ये दोनों मुल्क अलग अलग रहेंगे तब तक उनके रिश्ते भी अन्नेचुरल रहेंगे। न तो उनमें सही दोस्ती और न उन में सही दुश्मनी होगी। दोनों के मामले उलझे रहेंगे अन्नेचुरल रहेगा, अप्राकृतिक रहेगा। यह तो हम एक मूल तथ्य कह देते हैं। इसलिये मुझे अफसोस इस बात

का होता है कि भारत सरकार भी उतनी ही निकम्मी है अपनी जनता के लिये जितनी निकम्मी पाकिस्तानी सरकार पाकिस्तान की जनता के लिये है। अरे तारिक सुनो, लगे इधर उधर करने। दोनों मुल्कों की सरकारें पाजी हैं

श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह (बिहार) : "पाजी" पार्लियामेंटरी लैंगुएज नहीं है।

श्री राजनारायण : कांग्रेस यह समझती है श्रीमन्, ज़रा ख़याल करें . . .

उपसभाध्यक्ष (श्री अकबर अली खान) : आप ज़रा बेहतर अल्फाज़ इस्तेमाल करें।

श्री राजनारायण : पाजी शब्द बहुत ही पार्लियामेंटरी है। यह गांधी जी के मुखारविन्द से निकला हुआ शब्द ब्रिटिश साम्राज्यवाद के लिये है पाजी और बदमाश दोनों। दोनों शब्द गांधी जी के मैं इस्तेमाल कर रहा हूं। लेकिन जिस समय गांधी जी थे वह अंग्रेजों के लिये यह शब्द कहा करते थे। लोग समझते थे कि ठीक है। मगर यह पाजी और बदमाश कोई इन्सान नहीं होता। यह एक तरीका है, एक तर्जे अमल है। उस तर्जे अमल को जो भी इस्तेमाल करे वह पाजी और बदमाश है।

तो मेरे नज़दीक, मैं साफ साफ बता दूं, आज भंडारी साहब और इंदिरा दोनों एक जगह हैं, तारिक़ भी उसी जगह हैं, क्योंकि आज भारतवर्ष में एक बटा आठ मुसलमान हैं और अगर भारत और पाक एक हो जायेगा तो हिन्दुस्तान बन जायेगा। आपके जरिये तारिक साहब से कहना चाहता हूं, 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा, हम बुलबुले हैं उसकी यह गुलिस्तां हमारा' यह तो खत्म कर दिया उन लोगों ने जिन्होंने हिन्दुस्तान हिन्दुओं के लिये नारा दिया और जिन्होंने पाकिस्तान मुसलमानों के लिये नारा दिया। वह हिन्दुस्तान सत्य है। आज इसका नाम है भारत और उसका नाम है पाकिस्तान। अंग्रेजी में कहो तो कहो इण्डिया। तो भारत और पाकिस्तान एक में मिल कर के जब तक हिन्दुस्तान नहीं बनेगा तब तक कहीं न कहीं विवाद रहेगा, इसको दोनों मानते है।

मैं अब एक दूसरी थ्योरी चला रहा हूं वह यह है कि आज कांग्रेस नहीं चाहती कि भारत पाक एक हो। क्यों नहीं वह इस वातावरण को पैदा करती? क्योंकि आज मुसलमान एक बटा आठ हैं, कांग्रेस बराबर हर चुनाव में एक एक मुसलमान को डराती रहती है कि अगर हमको वोट नहीं करोगे तो ऐसा होगा। जब पाकिस्तान और भारत एक होकर मुसलमान एक बटा चार हो जायेंगे तो इतनी आसानी से भंडारी साहब नहीं कह पायेंगे, अगर वह एक बटा चार हो जायेंगे, तो उनको डरा नहीं पायेंगे कि तुमको पाकिस्तान भेज देंगे। फिर मसला हल हो जायेगा, सब का द्वार एक हो जायेगा, सबका घर एक हो जायेगा, सब एक मुल्क के लिये मरना जीना सीखेंगे। इसलिये न बेमतलब न भंडारी साहब तारिक़ साहब को दोष लगायें न बेमतलब तारिक़ साहब भंडारी साहब को दोष लगायें और अपने दिमाग को ठीक करें क्योंकि जब तक दिमाग ठीक नहीं रहेगा तब तक अनावश्यक ढंग पर एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाते रहेंगे और उससे समस्या का हल नहीं होगा। मैं जानना चाहता हूं यहां जितने भाषण हुए हैं, श्रीमन्, आप बैठे हुए हैं गद्दी में, किसी ने एक असम के सिवाय जो मूल समस्या है उसके बारे में कुछ कहा। हम पूरी तरह से बैठ कर ध्यान से सुनते रहे अपने मित्र भार्गव जी कि कुछ बोलेंगे कुछ बोलेंगे—मगर जनतंत्र जनतंत्र, राष्ट्रीयता राष्ट्रीयता खतरे में है, सिवाय इसके कुछ नहीं। देखा जाय झगड़ा कहां खड़ा है। चुनाव के पहले घोषणा की घर मंत्री ने श्री चव्हाण साहब ने, कहा कि फेडरेशन हो

[श्री राज नारायण]

जायेगा । सोचा कि सत्ता बटोर लो और ज्योंही चुनाव जीता, मेहता कमेटी आ गई, मेहता कमेटी ने कहा, नहीं फेडरेशन नहीं होगा बल्कि जो पहाड़ का इलाका है उसके लिये ज्यादा ओटोनामी दे दो और इसके बाद जब श्रीमती इंदिरा नेहरू गांधी आ गईं तो उन्होंने एक शोशा छोड़ दिया कि मैं मेहता कमेटी की राय से सहमत नहीं हूं । (*Interruptions*) ईमानदारी के साथ बोलो, समस्याओं को इधर उधर बहलाने से काम नहीं चलेगा । मैं आज जानना चाहता हूं, क्या चव्हाण क्या मेहता, क्या इंदिरा नेहरू गांधी ने असम के सवाल पर जो अपने जजबात का इजहार किया सब एक हों, ईमानदारी से कहो ..... (*Interuptions*) क्या एक हो ? अगर एक नहीं हो तो क्यों समय नष्ट करते हो यहां ? पहले बैठ कर कांग्रेस पार्टी का दिमाग एक करो और जब तक पार्टी का दिमाग एक नहीं है कैबिनेट का दिमाग एक नहीं है, कैबिनेट की जौइन्ट रेस्पांसिबिलिटी, सम्मिलित जिम्मेदारी के सिद्धान्त को मानते हुए उसी का एक एक मंत्री विभिन्न मौकों पर विभिन्न बातों को कहते रहें, यह सारी समस्या के जड़ में है । जो कांग्रेसी असम से हैं वह सुन लें ।

एक बात मैं अपने मित्र तारिक को कहना चाहता हूं । अगर यहां न हो तो उसक कानों तक हमारी आवाज पहुंचा दें कि क्या पूर्वी पाकिस्तान में बंगासम का नारा नहीं लगा था कुछ समय पहले, बंगासम के मानी बंगाल और असम एक हो । बंगासम का नारा क्या नहीं लगा था और अगर पूर्वी पाकिस्तान में बंगासम का नारा लगा था जो सत्य है, वस्तुस्थिति है तो फिर तारिक का जवाब क्या है ? सिवाय इसके कि दोनों मुल्कों को एक करो, कोई जवाब नहीं है और पूर्वी पाकिस्तान के ठेकेदार बन कर तारिक कहने लगे तो कोई पाकिस्तान का नाम ही न ले । हमारी मुसीबत हो जायेगी । मैं किसी चीज को छिपा कर कहना जानता ही नहीं । श्रीमन्, शुद्ध नारा लगा बंगासम का, बंगाल असम एक हो । मैं फिर कांग्रेस मेम्बरों से कहना चाहता हूं कि क्या पंडित जवाहरलाल नेहरू जब जिंदा थे और जब 1962 में चीन का हमला हुआ तो उन्होंने यह नहीं कहा था कि मैं नहीं जानता चीन के क्या इरादे हैं, असम की जनता पर बड़ी मुसीबत है, हमारी हमदर्दी असम के साथ है । तो क्या असम के लोगों ने यह नहीं कहा था कि अरे यह नेहरू तो सारा हिस्सा पाकिस्तान को दे चुके थे, वह तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी थे जिनकी वजह से यह हिस्सा भारत में रह गया । क्या तेजपुर खाली नहीं हो गया था, तेजपुर खाली हो गया था, कलक्टर साहब भागे, बैंकों में नोट जले थे, जेल के फाटक पर कैदी छोड़े गये थे। मैं आपके जरिये अपने नौजवान मंत्री श्री शुक्ल जी से कहना चाहूंगा कि जब तक भूत की अनुभूति नहीं करोगे, पास्ट को नहीं जानोगे और वर्तमान कर्त्तव्यों का ज्ञान नहीं रखोगे और भविष्य का सपना कैसा है क्या है उसको नहीं देखोगे तब तक इस मुल्क को आज कोई माई का लाल बचा नहीं सकता, इस मुल्क को कोई बचा ही नहीं सकता, यह मुल्क जा रहा है । जो मनःस्थिति सुबह देखी, असम अलग, मद्रास अलग, यह एक ही मनःस्थिति है । इसके इधर उधर मत जाना, जब मद्रास का सवाल आये मद्रासी खड़ा हो कर कहे 'हर्गिज नहीं', असम का मसला आये तो असम का खड़ा हुआ, 'हर्गिज नहीं' 'कोई यहां चिंता नहीं ।' श्रीमन्, शुद्धतः जब मुल्क दो हैं --मैं साफ

बता रहा हूं, मैं चाहता हूं भारत पाक का शुरू में महासंघ बने, फेडरेशन। फिर इसके बाद मैं चाहता हूं दोनों का एकीकरण हो जाय और जब तक महासंघ न बने और एकीकरण न हो या कोई ऐसी सरकार न बन जाय जो सभी के साथ इन्साफ करने की बात करे, तब तक एक इन्च जमीन भी हम पाकिस्तान को देने के लिए तैयार नहीं हैं क्योंकि जब दो अलग अलग हैं तो अलग अलग अपने राष्ट्र की सर्व-प्रभुसत्ता को कायम रखने के लिये, अपनी सीमाओं की सुरक्षा करनी होगी। मत समझना असम अलग है। यहां तो कच्छ समझौते से कंजरकोट, छादबेट जैसी जगहों को देने जा रहे हो, वही मनोवृत्ति वहां भी है। यह सबसे बड़ा सवाल है। आज मुल्क में बंगाल है, तो क्या बंगाल में कुछ नहीं हुआ? बंगाल में तीन साल पहले तमाम जितने बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग थे, जो वहां भैंसों का रोजगार करते हैं, तमाम लोगों को क़त्ल कर दिया जिसका सवाल उत्तर प्रदेश का विधान सभा में हुआ, मुख्य मंत्री से ख़त लिखवाया गया। क्या यही सवाल बम्बई में नहीं है, क्या वहां शिव सेना नहीं है? बम्बई की शिव सेना क्या है? बम्बई में हमारे उत्तर भारत के लोगों को भइया कहते हैं और बम्बई में एक बार नारा उठा है जो उत्तर भारत के लोग चले गये हैं—किसके दिमाग में यह चीज पैदा हुई है। इस तरह की जो दिमाग की प्रक्रिया है वह गलत है और यही आज आसाम में आई है क्या कुछ समय पहले इसी आसाम में बंगालियों के खिलाफ आन्दोलन नहीं हुआ था?

एक माननीय सदस्य : हुआ था।

श्री राजनारायण : हां, उस समय एक आन्दोलन हुआ था कि बंगालियों को हटाओ और निकालो आसाम से। तो मैं यह पूछना चाहता हूं कि इस सरकार के दिमाग में उस समय यह बात क्यों नहीं आई. मैं सीधे सीधे कहना चाहता हूं कि अगर शुद्ध देखा जाय कि जिस दिमाग की खुराफात ने कुदरत के जरिये बनाये हुए एक मुल्क हिन्दुस्तान को, जिस को भूगोल ने, तवारीख ने, समुद्र ने, पहाड़ ने एक बनाया, उसको इन्सान के दिमाग की फितरत ने दो हिस्सो में बांट दिया साफ साफ। तो वह कौनसी फितरत थी जिसने एक मुल्क को दो हिस्सों में बांट दिया? वही दिमाग और वही फितरत आज आसाम में भी आ रही है। मैं तीनों को दोषी पाता हूं।

एक तो सबसे बड़ा सवाल यह है कि जो अंग्रेजी साम्राज्यवाद था जिसने हिन्दू और मुसलमान के बीच में नफरत बढ़ाई और मुझे मालूम नहीं कि लोगों को इस बात की जानकारी है या नहीं कि 1905 में बंगाल के एक ले० गवर्नर ने एक लेख लिखा था और उसको लोगों ने पढ़ा या नहीं। उसमें लिखा था कि अंग्रेजी साम्राज्यवाद की दो बीवियां हैं। एक बीवी का नाम है हिन्दू और दूसरी बीवी का नाम है मुसलमान। हिन्दू बीवी 1905 के पहले चहेती थी और 1905 के बाद मुसलमान बीवी चहेती थी। कभी कभी अंग्रेज भी सही बात लिखते हैं। अंग्रेजी साम्राज्यवादी हुकूमत ने हिन्दू और मुसलमानों के बीच में नफरत को बढ़ाया केवल अपने साम्राज्यवाद को कायम रखने के लिए जब अंग्रेज यहां से गये तो वे इस मुल्क को जाते जाते दो हिस्सों में बांट गये ताकि हमेशा हमेशा के लिये ये मुल्क कमजोर रहें। आज दुनिया की बड़ी बड़ी ताकतें हैं, चाहे रूस हो, अमेरिका हो, चीन हो, अगर भारत और पाक एक होते, तो हमारी आबादी कितनी होती, शुक्ल जी? इधर की आबादी करीब 50 करोड़ है और उधर की आबादी को मिलाकर 64 और 65 करोड़ की आबादी होती। जो हम 10 अरब रुपया बार्डर में सेना रखने के लिए खर्च कर रहे हैं वह रुपया भी बचता। आप भी सिर हिला रहे हैं और इस बात की ताईद कर रहे हैं, मगर बेबस हैं। खाली दिमाग में यह बात आ जाती

है और पौरुष नहीं है। इस तरह से जो रुपया बार्डर में सेना रखने में खर्च हो रहा है वह बचता और वह रुपया देश में गरीबी तथा बेकारी को दूर करने में लगाया जाता और खर्च होता। सीधी साधी बात यह है कि इस लड़ाई के पीछे आर्थिकता का संबंध जुड़ा हुआ है। उसके पीछे माली हालत जुड़ी हुई है। हमारे एक मित्र ने कह दिया कि 100, 150 रिक्शेवाले मारे गये और उनके घर जला दिये गये। अगर देखा जाय तो मालूम होगा कि आसाम के अन्दर जो असमियां हैं, उनकी हालत ठीक नहीं है। उनका पेट भरता नहीं, तन ढकता नहीं, मकान उनके पास नहीं है, तालीम उनको उपलब्ध नहीं है। तो उनके अन्दर यह ख्याल पैदा किया जाता है कि अरे ये मारवाड़ी तुम्हारा धन लूट ले गये हैं और पहले तुम इनसे निबट लो, जब तक ये नहीं जायेंगे तब तक तुम्हारी माली हालत ठीक नहीं होगी। हमारे देवरिया, आजमगढ़ गोरखपुर और बस्ती जिले के बहुत से लोग गोहाटी में भरे पड़े हुए हैं वे लोग वहां पर सड़क कूटने का काम करते हैं, बिल्डिंग बनाने का काम करते हैं, जितने भी वहां पर काम होते हैं, वे सब करते हैं, इन सब लोगों पर चोट पड़ी क्योंकि असमियों में यह ख्याल पैदा किया गया कि अरे ये आकर रिक्शा चलाते हैं, सड़क बनाते हैं, अगर ये हट जायेंगे तो असमियों को काम मिल जायेगा। इस तरह की बात उनके दिमाग में बिठाई गई। इसलिये यह खुराफात है और इसमें हिन्दू और मुसलमान को मत देखो। जहां एक तथ्य है उसको भी देखना पड़ेगा। हिन्दू मुसलमान भी है, मगर इस आब्जेक्टिव सिचुएशन में इसको अलग मत करो। या तो फिर हमारी परिभाषा मानो। 'हिनस्ति दुष्टानिति हिन्दू"। जो दुष्टों का हनन करे वही हिन्दू है। न जनेऊ है, न पताका है। मुसलमान के बारे में हमारी परिभाषा यह है जो सलामत का लम्बरदार हो वही मुसलमान है। या फिर कबीर की बात मान लो।

"जो तू बामन बमनी जाया, आन बाट है काहि न आया"। अगर तुम मनी के पेट से पैदा होने मात्र से ब्राह्मण हो, तो हम से ऊंचे कैसे हो क्योंकि हम भी माई के पेट से पैदा होते हैं। तुम क्यों नही दूसरे रास्ते से आये।

"जो तू तुरुकू तुरुकिनी जाया, पेटहि खेतना क्यों न कटाया।" तुम क्या मुसलमान के पेट से पैदा होने से क्या मुसलमान हो। अगर सही है तो जब मां के पेट में था तो तेरा खतना कटा था? तो जिस तरह से मां के पेट से हिन्दू पैदा होता है, उसी तरह से मुसलमान भी पैदा होता है। जिस तरह से ब्राह्मण पैदा होता है, उसी तरह से भंगी पैदा होता है, अहीर पैदा होता है और दूसरे लोग पैदा होते हैं। तो मैं यह पूछना चाहता हूं कि इस सरकार ने इन बीस सालों में इस तरह की बुद्धि को क्यों नहीं जगाया? उसने इस तरह की बुद्धि को कहां जगाया? उसने तो अनावश्यक ढंग से ब्राह्मण और ठाकुरों को लड़ाया, ठाकुर नियों को लड़ाया और क्या यह राजनीति है? आज जो चुनाव किये जाते हैं वे शुद्ध जाति के आधार पर किये जाते हैं और यह सरकार राजनैतिक आधार पर चुनाव नहीं करवा रही है। वह जाति की नीति और साम्प्रदायिकता की नीति पर चुनाव करवा रही है और खुलकर यह कार्य शासक दल कर रहा है।

तो जो अंग्रेजी और अमरीका ताकतें हैं, वे इस कमजोरी को खूब जानते हैं और मैं श्री तारिक साहब से इत्तिफाक करता हूं कि इस संबंध में सी०आई०ए० का नाम क्यों नहीं लिया गया। मैं इत्तिफाक इसलिए करना चाहता हूं क्योंकि वे यहां पर बेस बनाना चाहते हैं। वे चाहते है कि अगर यह हिस्सा भारत से अलग हो जाय क्योंकि भारत हमारे खिलाफ बोल देता है, इसलिए शुद्धतः यह हिस्सा हमारे पास रहेगा जिसके जरिये हम अपनी इच्छा से कार्य कर सकेंगे और

अपनी तिगड़म पैदा करने के लिए उमने गरीबी मिटाने के नाम पर इस तरह की बात पैदा की है ।

एक बात और सुनिये, पहले मैं कुछ गफलत में था । हमारे मित्र आसाम से आये और मैं भी आसाम गया था । पहले हम अखबारों में पढ़ते थे कि फारेन एलीमेंट इन बातों के पीछे है । तो मैं समझता था कि फारेन एलीमेंट चीन हो सकता है, अमेरिका हो सकता है । लेकिन मुझे मालूम हुआ कि *असमियों के अतिरिक्त सभी को फारेन* ऐलीमेंट कहा जाता है । क्या यह बात सत्य नहीं है, हमारे मित्र बतला दें ? आसाम के जितने भी प्रतिनिधि हैं, उन्होंने इस बात को माना है कि आसाम में असमियों के अलावा जितने लोग हैं वे विदेशी माने जाते हैं, वे फारेनर माने जाते हैं । जो लोग हमारे वहां पर गये है, क्या वे फारेनर हैं ? इस असत्य को हटाने के लिए हमारी सरकार ने क्या कार्यवाही की ? जो लोग वहां पर गये हैं, जब उनको विदेशी कहा जायेगा और जब इस तरह का मसला उठेगा कि विदेशियों से पिंड छुड़ाओ तब जान भी जायेगी और माल भी जायेगा ।

मैं एक बड़ा सवाल यहां पर उठाना चाहता हूं । कांग्रेस वाले अपने को सिद्धान्त-वादी कहते हैं । मगर मैं उनसे एक सवाल पूछना चाहता हूं आपके जरिये । हमारे मित्र श्री दास ने कहा जो पी०एस०पी० के हैं कि राष्ट्रीय झन्डा जलाया गया, कम्यु-निस्टों ने कहा कि राष्ट्रीय झन्डा जलाया गया । हमारे कांग्रेस के लोग हमेशा यह गीत गाते हैं कि इसकी शान न जाये, चाहे जान भले ही जाये । तो मैं यह पूछना चाहता हूं कि जब कांग्रेस पार्टी के दफ्तर से राष्ट्रीय ध्वज को जलाया गया तो उसको बचाने के लिए किस कांग्रेस के आदमी ने अपनी जिन्दगी खपाई ? मैं कहना चाहता हूं कि किसी भी माई के लाल ने उस झन्डे के लिए अपनी जान नहीं दी ।

एक माननीय सदस्य : आप कहां थे ।

श्री राजनारायण : हम आपकी छाती पर यहां चढ़े हुए थे । तो मैं कहना चाहता हूं कि राष्ट्रीय ध्वज के नाम पर आंसू न बहाओ । अगर राष्ट्रीय झन्डे के लिए अपनी जान दे देते, उसकी इज्जत करते, तो आज इस तरह के मसले नहीं पैदा होते और ये मसले हल हो गये होते । लेकिन मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या यह सत्य नहीं है कि खुफिया विभाग की रिपोर्ट को श्री चालिहा साहब पहले से ही जानते थे । श्री चालिहा साहब के पास मुकम्मल रिपोर्ट थी और खुफिया विभाग निकम्मा हो गया था, यह बात गलत है । खुफिया विभाग ने यह रिपोर्ट दी थी कि श्रीमती इन्दिरा नेहरू गांधी ने जो बयान दिया है और जो अखबारों में निकला है उससे यहां का वातावरण उग्र करवाया जा रहा है। तो मैं यह पूछना चाहता हूं कि श्री चालिहा साहब क्यों भाग गये ? हर राज्य की राजधानी में 26 जनवरी को मुख्य मंत्री झन्डा फहराते हैं और श्री चालिहा साहब वहां पर नहीं थे ।

उपसभाध्यक्ष (श्री अकबर अली खान) : वे अपने मुस्तकर में थे । आप अब खत्म कीजिये ।

श्री राज नारायण : हां वे वहां चले गये शिवसागर में । वे शिवसागर में गोता लगाने के लिये चले गये थे । तो वे शिवसागर गये थे गोता लगाने और जो स्थिति होनी थी, वह हो गई । मैं पूछना चाहता हूं कि क्या वहां का सारा प्रशासन, सारा एडमिनि-स्ट्रेशन हट गया था, खत्म हो गया था और जब वहां लोगों के घर जल रहे थे तो वहां पुलिस क्यों नहीं पहुंची ? वहां तो कांग्रेस की सरकार है । इसलिये वहां कोई बहाना नहीं लगाया जा सकता कि वहां दूसरे हैं । अब, श्रीमान्, आप समस्या का समाधान देखें । एक बात मैं श्री तारिक की यहां पर दोहराना चाहता हूं । हमारी यह रपट है और मैं अकेले

[श्री राज नारायण]

में मंत्रियों से कह चुका हूं कि पंडित जवाहर लाल नेहरू की खिदमत में हम ने एक रपट आसाम समस्या के बारे में पेश की थी। हम जब वहां गये तो वहां घूम फिर करके हम उस को अच्छी तरह से देख कर के आये और हम आज भी कहते हैं कि चाहे जो भी सबब हो, पूर्वी पाकिस्तान से बहुत से लोग आसाम आये हैं, बसे हैं, आसाम की सरकार ने उनको जंगलात का पट्टा दिया है और वे उसमें खेती कर रहे हैं। कहीं दिमाग के कोने में यह चीज पड़ी हुई है कि अगर मुसलमानों का वहां बहुमत कर दिया जायगा तो आसाम पूर्वी पाकिस्तान के साथ मिल सकता है और पूर्वी पाकिस्तान और आसाम एक हो कर के पश्चिमी बंगाल को भी अपने में मिला सकते हैं। खुराफाती दिमाग इस ढंग से चल रहा है और इस का क्या कारण है, यह मैं नहीं जानता, लेकिन इस का जवाब आज तक इस सरकार ने नहीं दिया है।

हम को केवल फिर यही कहना है कि पहले श्रीमती इन्दिरा नेहरू गांधी जी कांग्रेस को इस सम्बन्ध में एक मत का बनायें और जब कांग्रेस का दिमाग एक हो जाये तो फिर विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं को बुला लें और उन से बात करें। यहां बात करने से ज्यादा अच्छा होगा कि गौहाटी में बात की जाय, आसाम में बात की जाय। हम उनके साथ आसाम चलने के लिये तैयार हैं। मगर मैं आज आप को एक चेतावनी देना चाहता हूं कि यह मसला रह रह कर के उठता रहेगा क्योंकि यह दूब की तरह है जिस की जड़ जब तक खोद करके नहीं निकाली जायगी तब तक वह दूब लहलहाती रहेगी, गरमी आयेगी तो वह झुलस जायेगी और थोड़ा पानी गिरेगा तो वह लहलहा जायेगी। इस लिये हिन्दू और मुसलमानों के बीच नफरत के बीज को, भारत और पाकिस्तान के बीच दुश्मनी के बीज को खत्म करो और उस के बीज को खत्म करने के बाद दृढ़ता से महासंघ बनाने के सिद्धान्त को ले कर आगे बढ़ो ताकि भारत और पाकिस्तान का एकीकरण हो, इस समस्या का समाधान हो, देश की गरीबी मिटे, लोगों का पेट भरे, लोगों को रहने के लिये मकान मिले और पहनने के लिये कपड़ा मिले और मर्ज की असली दवा हो।

SHRI M. PURKAYASTHA (Assam): Sir . . .

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN): Five minutes. Be as brief as possible.

SHRI M. PURKAYASTHA: Mr. Vice-Chairman, I am also from Assam. What has happened in Assam on the 26th January has shocked all patriotic people in the country. Did it happen all of a sudden or was it the result of a planned action well prepared behind the scenes? Sir, since July last posters have been appearing in all the towns of Assam which say: "We are not Indians. We are Assamese. Indian Exploiters Quit Assam. Oh Assamese, Why do you forget that you were always independent? We are young men living on the banks of the Brahmaputra. We are not afraid of death Assamese who have got real blood, and not bastards, will sacrifice their all for the independence of Assam." Not only these posters but inflammatory leaflets were also being distributed all over Assam which said: "Assam was not in India and Assam will not be in India. Death is preferable to life of subordination to foreigners." All these leaflets and posters pourned in the towns of Assam and I personally drew the attention of the Central Government, the Assam Government and the Assam Congress leaders to these facts but nothing, it seems, has been done. It was known to all that a Lachit Sena organisation had been formed. Though in name it was a secret organisation it was functioning openly and it is no secret that there were some Congress leaders, some PSP leaders . . .

SHRI BANKA BEHARY DAS: No, no.

SHRI M. PURKAYASTHA: Yes, I say there were some PSP leaders and some independent Opposition M.L.As. behind it.

(*Interruption*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN): Mr. Banka Behary Das, no interruption please

SHRI M. PURKAYASTHA: As I said there were and there are PSP leaders behind it.

SHRI BANKA BEHARY DAS: You should name them.

SHRI M. PURKAYASTHA: No, I need not.

SHRI BANKA BEHARY DAS: I want that they should be named.

SHRI M. PURKAYASTHA: Then came, you know, Mr. Vice-Chairman, these leaflets which said that the only reply to the Government of India's federation proposals is to declare independence of Assam. If you go through the speeches made by some Congress leaders of Assam, if you go through the Resolutions adopted by the Assam Pradesh Congress Committee, you will find there is a direct incitement to violence. The All Assam Students' Union which gave the call for observing a Protest Day on the 13th January, the All Assam Students' Union which gave the call for observing a hartal all over Assam on the 24th January is the organisation whose leaders were brought to Delhi by the Chief Minister of Assam Mr. Bimal Prasad Chaliha and who were housed in North Avenue through the kindness of the Chairman of the Housing Committee of the Lok Sabha and these people are responsible for what has happened in Assam on the 26th January. Was not police aware of it? Were there no Intelligence reports? There were. The Deputy-Commissioner—they are called District Magistrates in other States—of Kamrup convened a meeting of all the Magistrates and Gazetted Police Officers on the 25th January in his Chamber and told them that there were going to be disturbances the next day, that there was going to be desecration of the national flag and he wanted proper action to be taken. All the Assamese officers present there in a chorus said, no, nothing will happen, and that there should only be arrangements for guarding the national flag which will be ceremoniously hoisted in George Field. That explains why a large contingent of police force was deployed there where the flag hoisting ceremoney was held. So you cannot say that the Government was not aware of it, the Government was aware of it. They knew that the students had been incited to observe these Protests Days, hartals, boycotts and to demonstrate their feelings against Government's proposals for the reorganisation of Assam on a federal basis. On the 13th January protest meetings were held everywhere and also processions. On that day, 13th January, openly the slogans were raised: "Lachit Sena Zindabad"; "Assam for Assamese". The effigies of Shrimati Indira Gandhi, Prime Minister, and Mr. Y. B. Chavan, Home Minister, were burnt. They were not satisfied with all this; they called for the observance of a hartal throughout Assam on the 24th January. On the 21st January a joint meeting of the Executive Committee of the Assam Pradesh Congress Committee and the Congress Legislature Party was convened at Gauhati and it gave a call to the people of Assam to resist the Balkanisation of Assam, and said that they would stand by the people if the Government of India reorganised Assam not on the basis of the Asoka Mehta Committee Report. There was direct incitement and on the 24th January when this hartal was observed it was confined only to the Assamese-speaking districts. There are eleven districts in Assam but it was not observed in the Hills and in the District of Cachar from where I come. On the 24th January the House will be surprised these cards were distributed all over the State.

[Shri M. Purkayastha]

6 P.M.

It says:—

"Assam will celebrate the Adya Sardha Ceremoney of Prime Minister of India Mrs. Indira Gandhi on 24/1/68 (Wednesday). The Ashthi Bisharjana ceremony will be held at Narak Kunda. You are cordially requested to observe this day as Assams Independence day—People of Assam."

In spite of all preparations, it was not observed in five districts of Assam and it was not responded to by more than a million working class of Assam, viz., those who work in the tea plantations, farmlands, railways, road transport, engineering workshops and other workshops. So, the students decided that something more spectacular had to be done and that was done on the 26th January. Police did not take adequate precaution. Not to speak of adequate protection, those who wanted to act in self-defence were prevented from doing it. The police intervened. Before the very eyes of the police looting and arson took place. The police did not take action, till the Home Minister intimated that he would visit Assam on the 30th January. Only from the 29th January raids and searches began to be made. It is very significant. If attempts were made to recover the looted properties from the 27th January, I think most of the properties which were looted could be recovered, but it was not done till the evening of the 27th January. On the 30th January when Shri Y. B. Chavan visited Assam, he saw the devastation that had been caused in the city of Gauhati and he himself admitted that there was a complete collapse of the local administration. Has the Government done anything to prevent a recurrence of this. They have set up an enquiry committee under Mr. Justice K. C. Sen. But to whom will the report be submitted? It will be submitted to the Government of Assam, who are culprits in this case. The culprits are to sit in judgment on the report of a High Court Judge.

In 1961 in my district there was an agitation for recognition of Bengali as the official language of the district. In that movement eleven persons were killed by police firing, including one girl. A commission of enquiry was set up. The hon. Mr. Justice Gopalji Mehrotra submitted his report in 1962. In spite of an assurance given by Mr. Chaliha, the Chief Minister of Assam, on the floor of the Assembly, outside and personally to me, it has not been published. Evidently the report has gone against the Assam Government. So, we want an assurance from the Central Government and the Minister in this respect. Otherwise the recommendations and the findings will not see the light of the day. In 1960 there were widespread distubances against Bengalis. Then also an enquiry commission was set up. Its report has been submitted, but the recommendations have not been implemented. So, the Assam Government are dividing the people of Assam to achieve their own ends, to pressurise the Central Government and the people of Assam to accept the recommendations of the Asoka Mehta Committee. That is why they are encouraging separatist tendencies in the Brahmaputra valley. They are encouraging communal forces in my district, Cachar, where Muslims constitute 40 per cent of the population. A Minister of State of Assam Government, hailing from that district went to Pakistan after the partition of the country and return to India after four years. Now, he has been made a Minister of State. He is telling the people that if the six lakh Muslims of Cachar go out of Assam, the population of Muslims in Assam, which is 20 lakhs, will be reduced. It will be evident if I read the memorandum that has been submitted to the Government of India. A delegation came here from Cachar district under the leadership of that Minister of State. Now, from the first sentence you will see how communalism has been injected into it. It says: "Cachar is a district of Assam having an area of 20,680 square miles and a population

of 15,78,470. The population of this district mostly consists of Bengali Hindus and Bengali Muslims." Is there any other memorandum which has divided the people into Hindu Bengalis and Muslim Bengalis on communal lines? This is a direct attempt to divide the people of Assam on communal lines (*Time bell rings*). This is anti-national. They have slowed down the deportation of Pak infiltrators from Assam.

THE VICE CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN): Now, your time is up.

SHRI M. PURKAYASTHA: Mr. Vice-Chairman, you are aware that in 1964 foreigners' tribunals were set up for the deportation of Pakistani infiltrators from Assam. There is one such tribunal in my district and you will be surprised to know that during the last one year only three cases have been referred to it. What does it mean? The Government is preparing the ground for the ultimate abolition of these foreigners' tribunals on the ground of redundancy. They will say that there is not a sufficient number of cases. But according to a statement made by the Minister of State in this very House still there are 80,000 Pak infiltrators in Assam, which, according to us, must be four times more.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI "KBAR ALI KHAN): Thank you.

SHRI M. PURKAYASTHA: So, we ·ant the Central Government to rise to the occasion and protect the interests of Indians living in Assam, so that the Assam Goxernment may not have a free-play with the lives of the people of Assam.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN): Mr. A. P. Chatterjee. Please be brief.

SHRI A. P. CHATTERJEE (West Bengal): Sir, I do not know why this step-motherly treatment is being shown by the Chair, but in any event I shall try to finish as early as possible. You have already given time to the different parties and groups. The debate has been on the basis of party lines. Therefore, I have a right to speak on my own behalf, when innuendoes have been made against my party. Anyway, I shall try to finish very early because I am also pressed for time.

Now, first of all, I will begin by saying that there has been some reference to politically left elements, that the politically left elements have been responsible for the riots in Gauhati on the 26th January And the inevitable Naxalbari people also figured in the speeches of some Members. Like King Charles's head it pops up and whenever a person finds that something obnoxious has happened, some blame has to be laid at the doors of the communist party. So, the Naxalbari people are brought in. I am not holding any brief for Naxalbari at all. When you lay the blame at the door or the Naxalbari extremists, it is more or less an admission of your own bankruptcy and the bankruptcy of the other political parties who are laying this blame. As a matter of fact, there is a kind of hiding and concealment. They were responsible for these riots and in order to hide and conceal the real causes for the riot that happened at Gauhati on the .26th January, all these cliches are being used, *viz.*, Naxalbari, left communists, etc. I have my own experience as far as Assam is concerned. I know that in Assam a kind of chauvinism prevails and due to that it is almost impossible to do the day-to-day democratic work there. Whenever there is any democratic movement, whenever there is a democratic struggle, immediately there are certain interested circles which come forward and begin to raise the slogan of 'Assam for Assamese' and in that way they try to break up the democratic movement. We have our experience. I can immediately cite as an instance that there was the Shillong firing in August 1966, on which also there was a kind of an Inquiry Commission, and we know how the people there, first of all co-operated with the

[Shri A. P. Chatterjee]
Shillong Firing Inquiry Commission. But when they found that it was not going according to their liking, a cry went out in the Assamese press imputing all kinds of provincial motives to the people. This provincialism and chauvinism of the Assamese has become a galling and cankerous thing in the body politic and social politic of the Assamese life. That has to be uprooted if they are to have a really healthy movement, healthy social life and healthy political life in Assam. Therefore, it is not true to say that it is the Naxalbari extremists, left Communist extremists, who are doing it. Let us call a spade a spade. Let us know that it is actually certain interested circles who are linked with the Congress High Command, the same Central High Command which is sponsoring the Siva Sena in Maharashtra, who are sponsoring the lachit Sena there for their own ends, sordid ends. When the sordid ends come to the surface and people become disgusted, they suddenly come forward and say that the extreme left elements have done this. The extreme left elements have nothing to do with these things, with these ugly incidents in Assam.

Mr. Vice-Chairman, really the problem of Assam is a problem of the different national entities that are inhabiting there. As a person who is a Marxist I can say that as far as this problem of nationalities is concerned, that problem of nationalities is revived, is maintained, and is really kept alive by certain persons, by certain interested persons because they know that if this problem of nationalities is kept up, then the working class, the peasantry which consists of different kinds of nationalities, will be divided longitudinally. If this longitudinal division comes into the population of the State of Assam, then woe to the working class movement woe to all democratic movement. Therefore, it is in the interests of those who are against demorcatic movement to come forward and raise the tendencies of chauvinism and in that way set one nationality against another, in that way demolish and spoil the image of Assam.

Mr. Vice-Chairman, therefore, the only way in which it can be done, this problem of nationalities can be solved properly, the only way in which the Assamese body politic and Assamese social life can be made healthier, is that the different nationalities there must be given a kind of different places, a kind of different territories in which they can develop their own national sentiments and develop their own national characteristics without hinderance by others. My party, therefore, has always been in favour of the kind of plan of a Federation in Assam in which there would be opportunity for different nationalities like the hill tribes, the Bengalis and the Assamese to live together in that Federation and to be able to develop their own individual national geniuses in that Federation and in that way to contribute to the growth of Assam as a Federation. Unless that is done.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN): Please sit down. That will do.

SHRI A. P. CHATTERJEE: Mr. Vice-Chairman, I do not understand this. You have conducted this debate on the lines of party groupings. Why are you not allowing our party to have our say?. It should be done fairly. I am concluding I am saying. This is not the way in which, if I may say so with respect, to deal with a particular political group which is represented in this House. I am concluding I say. Why am I disturbed? Mr. Vice-Chairman, therefore, I am saying this that unless a kind of Federation plan is adopted, unless the different linguistic nationalities who are in Assam are given the right to group in kinds of Union territories or in kinds of States within the Federation of Assam, this kind of cancerous growth in the body politic will continue and this kind of chauvinism will continue

From the point of view of the democratic movement of Assam, from the point of view that this chauvinism has to be nipped in the bud, this Federation plan or a kind of plan by which the different linguistic nationalities will be given Union territories in which to develop their own national geniuses and interests is absolutely essential. That is the only way in which this cancerous and cankerous provincialism and chauvinism can be done away with in Assam.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN): Mr. Shukla.

SHRI JAGAT NARAIN (Haryana): Our name is there. What is our fault?

SHRI CHITTA BASU (West Bengal): What about me? I want to say something.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN): We have taken more than half an hour....

SHRI CHITTA BASU: Then let us not give our name. We have got our party represented here. Let us do our duty....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN): I am in the hands of the House. If you want, I have no objection, but I think the time that was fixed has already been exceeded. Still there are two persons from this side and one or two persons from that side. I am in your hands.

SHRI CHITTA BASU: Was the time distributed on the basis of the party strength?. I want to know, was the entire time for the debate distributed on the basis of the party strength?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN): As far as possible.

SHRI CHITTA BASU: No. It is not ...

...IRI BANKA BEHARY DAS: I ... for just fifteen minutes. Others ...longer

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN): All right, Mr. Basu.

SHRI CHITTA BASU: I do not want to raise objection and then to be called. It is very unfortunate to rise and say all these things and then to be given the time. Anyway since you have allowed me to speak, I will speak in very brief terms.

Mr. Vice-Chairman, the problem of Assam particularly in relation to the events that had taken place in Gauhati on the 26th of January have shocked everybody who thinks in terms of nationalism and national integrity. But I think you still remember that eight years after the widespread vandalism in the name of official language, in which case the Bengalis were the main target, Assam had to witness another vandalism, another erruption of violence and terror in the events that took place on the 26th of January. Sir, I think there are deep-lying reasons for it. If we want to view things only in isolation of all the events that have taken place in the body politic of Assam, we shall not be doing justice to the problem as such. I can only say this much that we can neglect the entire thing only at the peril of the integrity of our country.

I want to raise certain questions here. Were the events of 26th January in Gauhati spontaneous? Was it not sufficiently planned and preplanned by somebody?, If it was preplanned, who planned it? What was the role of the administration, and what was the role of all political parties there? In the matter of answering all those questions a long time is necessary, but what I can say is this that the Assam body politic provides a congenial breeding ground for chauvinism, narrow sectarianism and communal points of view. Even the Congress Party there is not immune from all these things. As everybody is well aware, the Congress Party is itself rivalry-ridden, group-ridden there, and it is common exper-

[Shri Chitta Basu]

ience that Assam body politic presents many complex problems arising out of the existence of multifarious, large number of social, economic and linguistic groups and each group or sub-group in the Congress administration wants to play one group against another either to preserve its own leadership or to remove from political office its political adversaries. And in this case, I can say that Mr. B. P. Chaliha wanted to make use of some socio-economic and linguistic group to maintain his political position there and the other group wanted to wean away some of his supporters, and there was competition between the two. That being the case, the responsibility rested on the leaders of the country to explain things in a proper perspective to the people who may be fanatic, who may have some narrow and chauvinistic point of view. Instead of doing that, they pointed accusing fingers suggesting that the maladies of Assam lay only in the outsiders, not in the basic policy of the Government, either of the Centre or of the State. It will be evident that a very considerable section of the administration—I will even go to the extent of saying if you will allow me, even the important personalities in the Congress hierarchy—was involved in this matter, who wanted to inspire all these groups and organisations like the Lachit Sena. I can say with the proof as I possess that because of that connivance of very important personalities, very important officials entranced in official positions, the entire section continued its rampage. Even I can say this much that even when the victims of the riotous people wanted to contact the police on the occasion of 26th January, the police officers were always saying that they were in contact with Shillong. But everyone knew that Chief Minister, Mr. Chaliha, was not at that time in Shillong nor in Gauhati. What was the reason why he did not remain present on that very particular day at Gauhati itself? He remained about 150 miles away from the capital. Everybody knew it. But all the time it was being told to the victims of the riotous vandalism that they were simply contacting the headquarters. What was the necessity of contacting the headquarters? It is being reported even by an important military officer that the police did not try at all to bring the matter under control. Had the police tried and failed, then the question of calling the military would have come in. But my accusation is this that the police did not try at all to control the situation, rather they became a partner, a willing partner, in loot in Assam. There is evidence to show that they also shared in the booties of loot and that these riotous people used new, sophisticated instruments, that they used oxy-acetylene stores, which can be available only if there is a pre-plan for the whole thing. Therefore, the total administration of Assam was willy-nilly, directly or indirectly, connected with the whole thing. Even the Home Minister was constrained to suggest that there was absolutely no law and order during this period of vandalism. What steps have the Government of India taken so far against this Ministry, against this particular Ministry, which could not maintain even the minimum semblance of law and order there? What action was being taken or is being contemplated to be taken? Now you raise the cry that there is lack of law and order in Madras, there is lack of law and order in many of the non-Congress States. I do not know what is your idea of law and order when it is not being properly maintained in a State run by a Congress Ministry.

Therefore, I think the whole thing depends entirely upon the Congress Party as such, not on the democratic parties there. Unless they are prepared to root out these anti-social elements of a sectarian and chauvinistic outlook and the communal forces, the body politic of Assam cannot b[e] cleared. And if the body politic [of] Assam cannot be cleared, there [is no] guarantee of forestalling any

ment of India should take adequate steps all the away in the matter so that these things can be prevented in the future.

श्री जगत नारायण : वाइस चेयरमैन महोदय, मेरे पास थोड़े ही मिनट है जो आपने दिये हैं और उस में दो तीन बातें कहना चाहता हूं। मैं बड़े अदब के साथ आप की वसाकत से वज़ीर साहब से यह कहना चाहता हूं कि यह हर रोज जो बड़े बड़े वी० आई० पी० आते हैं और फूलों की मालायें ले कर महात्मा गांधी की समाधि पर चढ़ाते हैं, महात्मा गांधी को, आइडियल्स को बड़ा याद किया जाता है, तो यह सब करने का क्या फायदा है जब कि उन की आंखों के सामने यह हालत है कि असम का सारा एडमिनिस्ट्रेशन बिल्कुल फेल हो गया और हमारा होम मिनिस्टर यह ध्यान दे कि वहां वाकई बिल्कुल सारा एडमिनिस्ट्रेशन फेल हो गया था, वहां हालत बड़ी नाजुक्तवे थी, तो मैं समझता हूं अपने होम मिनिस्टर के बयान के बाद वहां के मुख्य मंत्री को खुद ही रिजाइन कर देना चाहिये था और अगर उन्हों ने खुद रिजाइन नहीं किया तो कम से कम हमारी गवर्नमेंट को कहना चाहिये था कि आप यह जगह खाली कर दीजिये क्योंकि वहां पर मिनिस्ट्री तो कांग्रेस की ही बननी है और उस की जगह पर किसी और को ले आते जो वहां की हालत को ठीक कर सकता, वहां के एडमिनिस्ट्रेशन को ठीक चला सकता। मेरी वहां के चीफ मिनिस्टर से कोई मुखालिफत नहीं है मगर मैं इस बेसिस पर कहता हूं कि यह हर रोज महात्मा गांधी की समाधि पर फूलमालायें चढ़ाने का क्या फायदा है और हर रोज उन की महिमा गाने का क्या फायदा है। अगर हम महात्मा गांधी के आइडियल्स पर चल रहे हैं तो रास्ता सीधा यह है कि जो मिनिस्ट्री इस तरह फेल हो गई है उस मिनिस्ट्री को खुद ही रिजाइन करना चाहिये था और अगर वैसा नहीं किया तो फिर इन को उन के खिलाफ एक्शन लेना चाहिये था और कहना था कि आप हट जाइये जब कि उन की नोटिस में ट्रेजरी बैन्चेस से यह बात लाई गई है कि वहां हर बात में चालिहा साहब की चलती है और उस रोज वह अपने घर तक चले गये शिवसागर में, वे उस दिन गोहाटी में भी नहीं रहे और जो तमाम चीजें चल रही थीं उस का उन्हें इल्म था। मैं कह चुका हूं मुझे इल्म था दो महीने पहले। मुझे इस बात का पता था कि वहां ऐसे हालात होने वाले हैं और मैं ने जो पिछले हफ्ते स्पीच की थी उस में भी यह कहा था कि हालत इसीलिये खराब हुई है, जैसा मेरे भाई श्री राजनारायण ने कहा कि वहां पर एक बंसाम का मुल्क बनाने की कोशिश हो रही है जो माओ नवाज वहाँ नासिर हैं उनकी मदद से वह बिल्कुल ठीक कहा बांका बिहारी जी ने भी इसके मुताल्लिक आपको बताया। मैंने लचित सेना के मुताल्लिक अखबार से पढ़कर सुना था कि रेड गार्डस की लाइन पर वहाँ के रेड गार्डस के तरीके पर उनको ट्रेनिंग दी है उसी लाइन पर सेना बनाई गई है। तो मैं कहना चाहता हूं कि चालिहा साहब को खुद ही रिजाइन करना चाहिए था नहीं तो इस वजारत को कहना चाहिये कि वह वजारत खाली कर दें। मिनिस्ट्री वहाँ कांग्रेस की ही बननी है। ऐसी मिनिस्ट्री बनती जो वहाँ की ला एन्ड आडर की हालत को दुरुस्त करती

तीसरी बात मैं यह अर्ज करना चाहता हूं आप भी मुझ से मुत्तफिक होंगे कि इस देश में जगह जगह सेनाएं बन रही हैं। ये सेनाएं इस देश का भट्टा बिठाएंगी। मैं आपको बताऊं कि जिस ढंग से हर सूबे में सेनाएं बन रही हैं मद्रास में बन रही हैं असम में बन रही है, बम्बई में बन रही है और हमारे पंजाब में भी नारा लगा दिया कि हमें भी यहां पर सिख होमलैन्ड दिया जाय इसी तरह से हर स्टेट में सेनाएं बनती हैं तो मैं पूछना चाहता हूं कि आपने पिछली दफा

श्री जगत नारायण

कराया, उसको आपने कब हरकत में लाना है। जब आपको मालूम है कि देश के सीने पर कुल्हाड़ा मार रहे हैं, देश की एकता को खत्म कर रहे हैं, यह सेनाएं इसलिये बनी है कि देश की एकता खत्म हो जाय और देश के टुकड़े हो जायं, तो फिर सेन्ट्रल गवर्नमेंन्ट में क्यों नहीं आई। यह मेरी समझ में नहीं आता जब कि उनके आँखों के सामने नक्शा हो कि देश तीरअंतार होता जा रहा है।

तीसरी बात यह है कि उनको वहाँ की हालात का पूरा जायजा लेना चाहिये। जो उनकी सेन्ट्रल इन्टेलिजेन्स है अगर वह भी उनको हालात का जायजा देती हैं कि यहाँ हालत खराब हैं कि वहाँ इस वक्त हुकूमत नहीं चल सकती है तो बेशक उनको कोई कदम उठाना चाहिये। क्या उनका एक ही काम है कि जहाँ कहीं नान-कांग्रेस गवर्नमेंन्ट कायम हैं उनको तोड़ा जाय?

जब वहाँ के बारे में यह मालूम हो गया था कि वहाँ पर गड़बड़ होने वाली है तो वहाँ पर गवर्नर का रूल क्यो नही कायम किया गया? लेकिन हमारी कांग्रेस सरकार ए० आई० सी० सी० में यह रिजोल्यूशन पास करवाती है कि जो नान-कांग्रेस गवर्नमेंट हैं उनको तोड़ा जाय। जब सरकार अपनी आँखों से वहाँ पर देख रही थी, जब होम मिनिस्टर साहब यह तसलीम करते हैं कि वहाँ पर सारी एडमिनिस्ट्रेटिव मशीनरी फेल हो गई है ला एन्ड आर्डर फेल हो गया है, तो फिर वहाँ पर गवर्नर का रूल क्यों नही कायम करते हैं? जब वहां पर इतनी हालत खराब हो गई है जिसके लिए हम सब लोगों को दु:ख है, तो जो हमारा बार्डर का प्राविन्स है जहां पर चीन और पाकिस्तान वाले गड़बड़ करना चाहते हैं, वहाँ पर सरकार ने फौरन कदम क्यों नहीं उठाया?

वहाँ पर जो अंग्रेज और अमरीकी पादरी हैं वे वहाँ पर इस मूवमेंट के पीछे जरूर [illegible]

मैं ने स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू जी का एक रिपोर्ट दी थी कि किस तरह से वहाँ पर पादरी काम करते हैं। वहाँ पर पादरी किस तरह से इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि यह हिस्सा हिन्दुस्तान से अलग हो जाय। इस समय पंडित नेहरू नहीं हैं और मैंने यह रिपोर्ट उनको दी थी और इस के मुतल्लिक उनके साथ एक घंटा बैठकर बात की थी, जब मैं पंजाब में मिनिस्टर था और एजूकेशन कांग्रेस में शामिल होने के लिए असम गया हुआ था।

इसलिए मैं अदब के साथ कहना चाहता हूं कि वहां पर जो कुछ हुआ है उसके पीछे पाकिस्तानियों का हाथ है, चीनियों का हाथ है और साथ ही जो वहाँ पर पादरी हैं, उनका भी हाथ है। ये जो पादरी हैं, चाहे वे ब्रिटिश हों, चाहे अमेरिकन हों, चाहें कहीं के हों,, वे सब हिन्दुस्तान के दोस्त नहीं हैं, हमदर्द नहीं हैं, वे हिन्दुस्तान के दुश्मन हैं और इस ढंग से सारी चीजों को चला रहे हैं जिस से वह हिस्सा हम से अलग हो जाय। इसलिए मैं अर्ज करना चाहता हूं कि मजबूत हाथों से वहाँ के एडमिनिस्ट्रेशन को ले लेना चाहिये और वहाँ पर गवर्नर का रूल कायम कर देना चाहिये। इस तरह से देश में जो तीरा तीरा हुआ है उस से देश को बचाने की कोशिश करें।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA): Mr. Vice-Chairman, Sir, almost all the Members who have spoken here and the political parties in the country have condemned unequivocally the recent happenings in Gauhati. But, Sir, as the Members have pointed out, particularly Mr. Tariq, these events that took place in Gauhati must be viewed in the national context. What were the local urges, what were the local reasons, is not so relevant as the very ungainly and dangerous feelings that you see erupting in various parts